IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनुसंधान समस्या

Archana Rana

Assistant professor of Radha Govind University

भूमिका

किसी भी अनुसंधानकर्ता को अपने चयन किए गए विषय में समुचित उत्पन्न समस्या को पूरा करने के पश्चात ही अपने अनुसंधान कार्य को समाप्त करता है। किसी भी चयनित विषय पर अनुसंधान करने के लिए व्यक्ति को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, किसी भी शोध को करते समय अनुसंधानकर्ता को अपने विषय के प्रति रुचि होनी चाहिए। अपने कार्य के उद्देश्य को पूरा करने के लिए विषय का रुचिकर होना अति आवश्यक है। अनुसंधान समस्या को सरल बनाने के लिए अनुसंधानकर्ता को उस विषय का पूरा ज्ञान अवश्य ही होना चाहिए। सबसे पहले यह जानने की आवश्यकता है की अनुसंधान समस्या क्या है और यह किन– किन कारणों से एक अनुसंधानकर्ता के लिए उत्पन्न हो सकती है। अनुसंधान समस्या से तात्पर्य दो या दो से अधिक चरों के बीच संबंध बताने वाले किसी अनुत्तरित प्रश्न या जिज्ञासा से होती है। जिसे कथन रूप में भी लिखा जा सकता है और प्रश्न रूप में भी लिखा जा सकता है। किसी भी अनुसंधान को उसके उद्देश्य तक ले जाने के लिए इसका पहला सोपान अनुसंधान समस्या से ही शुरू होता है। और यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पहला चरण माना गया है। अनुसंधान समस्या का समाधान करके एक नवीन ज्ञान का सृजन होता है, अनुसंधान समस्या के ऊपर कई विद्वानों ने अपनी अलग–अलग परिभाषाएं दी हैं जैसे –

*फ्रेड. एन.करलींगर ने यह बताया है कि समस्या एक प्रश्नवाचक वाक्य कथन हो सकता है ? वहीं

*जॉन. सी. टाउनसैंड के अनुसार समस्या समाधान के लिए प्रस्तावित प्रश्न है। और

*एफ. जे. मैकगुएन ने कहा है समस्या वह है जो प्रश्न प्रस्तुत करती है। जिज्ञासा उत्तर व्यक्ति को समस्या ज्ञाताओं के प्रयोग से किया जाता है।

विषय का चयन

अनुसंधानकर्ता का अपने विषय को सरल व मूर्त प्रकृति का रखना चाहिए। समस्या को स्पष्ट शब्दों में लिखा जाना चाहिए। समस्या का चयन किसी नैतिक मूल्यों से ना होकर उसका संबंध अपने विषय क्षेत्र पर हो समस्या ऐसी हो जिस पर व्यक्ति को कार्य करने में पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो। अनुसंधान करते समय अपने समयावधि तथा धन के व्यय को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। समस्या वैज्ञानिक विधि के प्रयोग द्वारा संभव हो, अनुसंधान का क्षेत्र में किया जा रहा कार्य ज्ञान के भंडार में वृद्धि करने वाला हो। समस्या समाधान करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वर्तमान में उसका उत्तर कहीं उपलब्ध ना हो। अनुसंधान समस्या सिद्धांत तथा व्यवहारिक दोनों ही दृष्टि से परिपूर्ण हो। शोधकर्ता को एक नए ज्ञान के साथ ठोस परिणाम पर ले जाने वाला होना चाहिए। अनुसंधानकर्ता को अपने व्यक्तिगत

परिस्थितियों को भी ध्यान में रख कर किसी विषय या क्षेत्र का चयन करना चाहिए। अनुसंधान करते समय व्यक्ति को पहले से ही अनुभव हो उस क्षेत्र विषय के बारे में अगर कोई समस्या का चयन करता है तो उसे उस पर आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए। समस्या का ना बहुत अधिक सरल हो और ना अधिक विशिष्ट हो यह ध्यान रखना चाहिए। शोधार्थी अपने विषय चयन करते समय पूरी स्वतंत्र होकर विषय को चुनें, व्यक्ति को शोध निर्देशक के दबाव में कभी नहीं आना चाहिए, शोधकर्ता को अपनी अभिरुचि अपनी सूझबूझ से समस्या का चयन करना चाहिए।शोध एक साधना के समान माना जाता है विषय चयन करते समय विषय का समाज में और साहित्य में उपलब्धता हो यह ध्यान में रखना चाहिए। अनुसंधानकर्ता को जिज्ञासु होना चाहिए और किसी भी तथ्य की खोज करने में व्यक्ति को जिज्ञासा ही उसे आगे की ओर ले जाती है और सफल बनाती अनुसंधानकर्ता को अपने विषय चयन और शोध में सामंजस्य बनाए रखना चाहिए।

अनुसंधान समस्या हेतु सामग्री की उपलब्धता

अनुसंधान समस्या और उसका समाधान हजारों वर्षों से मनुष्य किसी ना किसी रूप में करते आ रहे हैं। अनुसंधान समस्या वर्षों से ही मानवों के लिए चुनौतीपूर्ण रहा है और मनुष्य वर्षों से इसका प्रत्यक्ष अवलोकन करते आ रहे हैं। प्राचीन अनुसंधान और वर्तमान के अनुसंधान के क्षेत्र स्रोतों में भी बहुत ज्यादा अंतर देखने को मिलता है। विभिन्न विषयों पर विभिन्न क्षेत्रों में कई अनुसंधान किए गए हैं। और वर्तमान में किए जा रहे हैं। शोधकर्ता को अपने विषय चयन के साथ अपने क्षेत्र सामग्री की उपलब्धता को ध्यान में रखना चाहिए और वह स्त्रोत व्यक्ति को किस दिशा में या अभिलेख में मिलेंगे यह ध्यान रखना चाहिए, शोधकर्ता को कई बार अपने क्षेत्र विशेषज्ञों से भी सलाह लेनी चाहिए शोधार्थी अपने संसाधनों उद्यमों से साधन एकत्रित कर किसी नतीजे पर पहुंचता है व्यक्ति अपने अध्ययन स्थल पर जाकर प्रत्यक्ष रूप से अपने क्षेत्र विषय से जुड़े सामग्री का अध्ययन करता है तथा साक्षात रुप से देखने पर जो अवलोकन करता है उसे शोधार्थी को बहुत ही हद तक मदद मिलती है इसके साथ ही अनुसंधान के लिए उचित स्थान पर पहुंच कर सूचित व्यक्ति से मिलकर भी जानकारी हासिल करता है। किसी भी सूचित स्थान पर जाने से पहले शोधार्थी को यह भी ध्यान देना चाहिए कि अगर उसके क्षेत्र विषय से संबंधित स्रोत किसी अभिलेख, आर्टिकल, मैगजीन या ई कंटेंट मे मिलते हैं तो वह व्यक्ति अपने शोध में शामिल कर सकता है और शोधकर्ता को ज्यादा आसानी से सामग्री मिल जाएगी सामग्री को सही तरीके से अवलोकन करने के लिए व्यक्ति को सबसे पहले योजना बनानी पड़ती है और योजना बनाने के लिए उपकरणों की सहायता देनी पड़ती है।

'अनुसंधान उपकरणों का व्यापक ज्ञान

किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए हमें उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है और अनुसंधान के कार्य के उद्देश्य को पूरा करने के लिए भी विभिन्न उपकरणों की सहायता लेनी पड़ती है यदि कोई अनुसंधानकर्ता यह तय कर ले कि उसे किस किस तरह के उपकरण की आवश्यकता पड़ सकती और इसी तरह वह अपने योजना की तैयारी कर सकता है।

अनुसंधानकर्ता को अगर अपने अनुसंधान समस्या में सुधार लाने के लिए कोई और उपकरण की आवश्यकता पड़ती है तो वह अपने अनुसार उसको बना लेता है या उपकरण से तात्पर्य उपस्थित पर यहां डाटा संकलन से है या आराम से ही शोधार्थी को पता होना चाहिए कि उसको किस तरह के उपकरण की आवश्यकता पड़ सकती है और उस व्यक्ति को किस तरह के आंकड़े प्राप्त होंगे उस आंकड़ो की खासियत और विशेषता या सीमा कितनी होगी और इसकी विश्वसनीयता वैधता एवं वस्तुनिष्ठता क्या है वैज्ञानिक अनुसंधान यानी सैंपल इन न्याय दर्शन कैसे किया जाता है न्याय दर्शन के अनुसार यह उपकरण अगर लिखित उपकरण हो सकते हैं

1.प्रश्नावली (Questionnaire)

a. अनुसूची (Schedule)

b. चिंहाआंकन सूची (Cheak list)

c. निर्धारण मापनी (Rating scale)

d. प्राप्तांक पत्र (Score card)

2. अवलोकन (Observation)

3. साक्षात्कार (Interview)

4. मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological Testing)

वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए अनुसंधानकर्ता को अपने उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है जिसके आधार पर डेटा का संकलन किया जाता है शोधकर्ता का शोध के समय किया गया प्रश्नावली को उचित दृष्टिकोण से रखना चाहिए अनुसंधानकर्ता अध्याय उपकरण को इस तरह उपयोग करें कि उसमें विश्वसनीयता परिणाम उपलब्ध हो सके। उत्तरों का सही और उपयोगी होना चाहिए अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के दौरान उपकरणों के उपयोग मे सीमित धन का भी उपयुक्त ध्यान रखना चाहिए।

1. प्रश्नावली

अनुसंधानकर्ता को अपने उपकरण में प्रश्नावली को एक अध्ययन प्रक्रिया के रूप में सामान्य से विशिष्ट के रूप में रखा जाना चाहिए। प्रश्नावली को वैध रखना चाहिए प्रश्नों का दायरे को सीमित रखना चाहिए। साक्षात्कर्ता को शिक्षित होना चाहिए जिससे साक्षात्कार लेने में सुविधाजनक हो। प्रश्नों को प्रत्यक्ष विधि तथा डाक विधि द्वारा भी भेजा जा सकता है।

अ. अनुसूची

प्रश्नों के समुच्चय के लिए अनुसूची समूह का प्रयोग किया जाता है। अनुसूची प्रश्नों की एक श्रृंखला के लिए बनाया गया है आमने – सामने पूछे जाने वाला प्रश्न ही अनुसूचित कहलाता है। अनुसूची साक्षात्कार के लिए उपयोग किया जाता है।

ब. चिन्कर्ता द्वारा एक जांच सूची तैयार की जाती है जिसमें प्रश्नों के उत्तर को हां या ना में लिखा जाता है। इससे यह पता चलता है कि साक्षात्कारकर्ता को किन प्रश्नों का उत्तर मिल पाया है या नहीं मिल पाया है यह यह अनुसंधान की मूल्यांकन में काफी हद तक मदद करती है।

स. प्राप्ताक पत्र

प्राप्तांक पत्र अनुसंधान की प्रक्रिया में किसी वस्तु या व्यक्ति का मूल्यांकन करने में सहायता करती है। प्राप्ताक पत्र किसी भी भवन विद्यालय, पाठ्य पुस्तकों स्वच्छता व्यवस्था, विद्यालय के धन व्यवस्था अभिलेख, निर्देशन तथा माध्यमिक विद्यालयों के मूल्यांकन आदि में अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।

2. अवलोकन

अनुसंधान अवलोकन साक्षात्कारकर्ता द्वारा समाज में किसी व्यक्ति या सामाजिक व्यवहार पर स्वयं निरीक्षण करने के पद्धति को अवलोकन कहते हैं। हर व्यक्ति का अपने कार्य करने का विभिन्न तरीका होता है और विभिन्न व्यक्ति का किया गया अवलोकन भी भिन्न होता है अवलोकन पद्धति को अनुसंधान के पहले चरण से ही शुरू हो जाती है। यह अवलोकन किसी घटनाओं, सूचनाओं, व्यक्ति के व्यवहारों पर भी हो सकता है। जैसे अगर किसी विद्यालय का अवलोकन किया जाए तो उस विद्यालय की व्यवस्था संचालन वहां के आचार व्यवहार वहां की पुस्तकालय संपूर्ण विद्यालय के परिसर आर्थिक, सामाजिक व्यवस्थापन पर ध्यान दिया जाता है। इस तरह के अवलोकन को अनुसंधान अवलोकन कहा जाता है, यह अनुसंधान के मूल्यांकन में सहायता करती है।

3.साक्षात्कार

साक्षात्कार अनुसंधान समस्या के उद्देश्य को पूरा करने के लिए मनोवैज्ञानिक तरीके से प्रत्यक्ष रूप से ली गई सूचना या बयान साक्षात्कार कहलाता है। मैक्क्रोबी तथा मैक्क्रोबी के शब्दों में साक्षात्कार से अभिप्राय एक ऐसी स्थिति है जिसमें एक व्यक्ति से आमने–सामने लिया गया मौखिक सूचना अथवा विचार तथा विश्वसनीयता के लिए प्रेरित करने का प्रयास करते हैं इसमें साक्षात्कारकर्ता अपने विषय से संबंधित सामाजिक समस्या को अपने प्रश्नों के द्वारा साक्षात्कार लेते समय निदानात्मक उत्तरों के हल की खोज करता है अनुसंधान साक्षात्कार मे वह अपने प्रश्नों से आंतरिक उत्तर की अपेक्षा करता है। साक्षात्कार लेते समय सरल और सुलझे तरीके से इंटरव्यू लिया जाता है अनुसंधानकर्ता को एक कुशल व्यक्ति की तरह होना चाहिए विनम्र स्वभाव से बहुत ही सही तरीके से सामाजिक व्यवहारिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण से अपना स्वयं को सिद्ध कर सकता है और एक अच्छे साक्षात्कार मे विश्वसनीयता का गुण होना चाहिए। वैध तरीके से लिया जाना चाहिए इसमें व्यवहारिकता एक महत्वपूर्ण तथ्य है इसमें अभिरुचि होनी चाहिए मितव्ययिता, विभेदीकरण, व्यापकता होनी चाहिए। मन की जिज्ञासा को हल करने के

लिए मनोविज्ञान परीक्षण द्वारा उत्तर की खोज की जानकारी की जा सकती है। इससे साक्षात्कारकर्ता को अपने प्रश्नों के उत्तर आसानी से मिल जाएंगे और अनुसंधान का उद्देश्य भी पूरा हो जाएगा।

4. मनोवैज्ञानिक परीक्षण

अनुसंधानकर्ता मानसिक योग्यताओं का अध्ययन करने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण उपकरण का उपयोग करता है इसमें उपलब्धि परीक्षण, बुद्धि परीक्षण, व्यक्तित्व तालिका यह तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं पर जांच करता है।

आधार सामग्री का विश्लेषण

.....

शोधकर्ता को पदत्तो के संकलन के पूर्ण हो जाने के बाद ही उसका प्रकरण तथा विश्लेषण कर लेना चाहिए अन्यथा अधिक विलंब करने पर बहुत सारी प्रश्नावली अधूरी रह जाती है। शोधकर्ता को अपनी योजना के मुताबिक आंकड़ों का संकलन करने के बाद ही इन कार्यों को कर लेना चाहिए शोधकर्ता अपने आधार सामग्री को प्रकरण और विश्लेषण के लिए प्रदत्तो को फिर से समूह बंद करते हैं अपने प्रदत्तो को सही रूपरेखा देने के लिए यहां चार मुख्य बिंदुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

1. संपादन (Editing)
2. वर्गीकरण (Classification)
3. कूटांकन (Coding)
4. साधारणीकरण

संपादन – यह एक महत्वपूर्ण स्तर माना जाता है, किसी भी प्रश्नावली को अपने संकलन में रखने के लिए शोधकर्ता कितनी भी अच्छी तरह से साक्षात्कार लेने का प्रयास किया गया हूं कुछ ना कुछ त्रुटि रही जाती है। चाहे अनुसंधानकर्ता अपने हाथों से डाटा को लिख ले कुछ ना कुछ प्रश्नावली छूट ही जाती है। कभी–कभी हाथों से लिखे गंदे हस्त लेख के कारण कुछ ना कुछ जानकारी रह ही जाती है। इसलिए इस समस्या से निकलने के लिए संपादन एक महत्वपूर्ण कार्य करती है इसलिए अनुसूचियों का संपादन अति आवश्यक भाग हो जाता है यदि साक्षात्कारकर्ता अपने फील्ड वर्क में किसी व्यक्ति से कोई प्रश्न पूछना भूल जाए या कोई व्यक्ति किसी प्रश्न का उत्तर ना देना चाहता हो, तो उस समय शोधकर्ता दिए हुए प्रश्नों से अनुमान लगाकर उन प्रश्नों का हल निकाल लेते हैं। इस प्रकार अनुमानित सूचनाओं का हल निकाल लिया जाता है। शोधार्थी को यह प्रयास करना चाहिए कि कहीं कोई त्रुटि ना हो अपने किए गए न्यायदर्श की जांच पहले से ही कर लेनी चाहिए कि सभी प्रश्नावलीयां पूछ ली गई हैं या कुछ छूट गई हैं । सभी सूचनाओं की जांच कर भर लेना होता है ताकि कोई समस्या ना हो। कभी–कभी साक्षात्कारकर्ता प्रश्न पूछने की उत्सुकता में प्रश्न पूछना भूल जाते हैं इस तरह संपादन के द्वारा इन त्रुटियों को कम किया जा सकता है और जिन प्रश्नों का उत्तर उत्तरदाता ने देने से अस्वीकार कर दिया हो उसके संबंध में साक्षात्कारकर्ता को उचित नोट अवश्य ही देना चाहिए।

वर्गीकरण– वर्गीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्त सूचनाओं, समय, स्थान को सूचीबद्ध या क्रमबद्ध करना होता है। यह एक मुख्य चरण है जिसमें किसी भी डाटा को उसे विभाजित कर अलग– अलग भागों में रखा जाता है वर्गीकरण को स्पष्ट स्वतंत्र तथा समजातीय इकाइयों से तैयार करना चाहिए इसका आधार गणितीय गणना द्वारा इकाई से प्राप्त मूल्यों का योग पूर्ण समग्र में प्राप्ति योग के बराबर हो। वर्गीकरण गुणात्मक होना चाहिए मानकिय आंतरिक मूल्यों पर आधारित होना चाहिए।

कूटांकन – कोडिंग प्रदत्तो को अंकों मे बदलकर उन्हें कूटांकन मैट्रिक्स में दर्शाने की प्रक्रिया को कहते हैं। यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है कूटांकन का उद्देश्य उत्तरों को सार्थक वर्गों में वर्गीकृत करना होता है। ताकि उसका वास्तविक रूप लाया जा सके। कूटांकन फ्रेम यह कार्य एक प्रश्न से होता है जहां प्रश्न केवल कुछ ही उत्तर देते हैं वहां समस्या नहीं होती है, प्रश्नावली पर अपेक्षित उत्तरों के लिए कोड निर्दिष्ट करने की प्रक्रिया को किया जाता है। इसमें सामाजिक विज्ञान, स्प्रेडशीट, एक्सएल और भी अनेक सॉफ्टवेयर जिससे उत्तरों को फील्ड वर्क के दौरान ही कोडिंग की जाती है।

सारणीकरन – सांख्यिकीय विश्लेषण को सारणीकरन कहते हैं। सभी अनुसूचियों के प्रदत्तो को एक जगह मिलाने पर कितने लोगों ने क्या उत्तर दीया कितने लोगों ने A का उत्तर X में दिया और कितनों ने Y में उत्तर दिया । विद्वान करलिंजर के शब्दों मे सारणीकरन वर्गीकरण का मेकेनिकल पक्ष है इसके द्वारा अंकित प्रदत्तो को व्यवस्थित रूप से इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है जिसमें अध्ययनरत समस्या पर प्रकाश डाला जा सकता है।

मूल्यांकन

——

अनुसंधान समस्या विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। जिनका समाधान कुछ त्रुटियों को कम करके किया जा सकता है, समस्या का निराकरण करते समय कुछ विरोधी परिणाम भी अनुसंधानकर्ता को परेशान कर सकते हैं यह परिणाम प्रयोगकर्ता द्वारा सही ढंग से नहीं करने की वजह से भी हो सकता है। शोधार्थी को अपने समस्या की पहचान कर किसी एक समस्या पर ही केंद्रित रहना चाहिए और जानकारी एकत्रित करना चाहिए। जब किसी समस्या की खोज तभी की जाती है जब उसकी आवश्यकता होती है, उसी को समस्या का आधार माना जाता है। जब तक किसी भी खोज मे जिज्ञासा या आवश्यकता ना हो तब तक उसे आधार नहीं माना जा सकता है। जो भी प्रश्न पूछे जाते हैं वही प्रश्न सामाजिक समस्या के मूल्यों के आधार पर समस्या का मूल्यांकन किया जाता है। समस्या के आरंभ से ही शोधार्थी को यह प्रश्न जान लेना चाहिए कि समस्या किन – किन बातों से हो सकती है।

क्या समस्या ऐसी है जिसे शोध द्वारा हल किया जा सके? और इसके आंकड़ों को उपलब्ध किया जा सके। इस समस्या के आंकड़ों को एकत्रित करने में कठिनाई तो नहीं होगी।

शोधार्थी समस्या का चयन क्यों करना चाहते हैं?

क्या इस समस्या को हल करने में रुचि होगी या नहीं?

कौन से कारण हैं जिससे समस्या को सरल व रोचक बनाया जा सकता है? जिसमें शोधकर्ता की अभिरुचि बनी रहे।

क्या इस समस्या का कोई सैद्धांतिक मान है? क्या इस समस्या से इस अज्ञानता की खाई को भरा जा सकता है?

क्या इस समस्या पर शोध किया जा सकता है?

क्या इस समस्या में धन का व्यय ज्यादा तो नहीं आएगा?

शोधार्थी को यह ध्यान रखना चाहिए। इन प्रश्नों के उत्तर का अनुमान अनुसंधानकर्ता को अनुसंधान करते समय जब अनुसंधान समस्या की रूपरेखा तैयार किया जा रहा हो तभी कर लेना चाहिए। शोधकर्ता के लिए अपने दिन–प्रतिदिन के अनुभवों का स्रोत शिक्षकों, छात्रों एवं अभिभावकों द्वारा भी समस्या का अनुभव लिया जा सकता है जैसे छात्रों और अभिभावकों के स्कूल भेजने के विषय मे भी यह एक समस्या हो सकती है, जैसे कोविड–19 में बच्चों के ऑनलाइन पढ़ाई करने से ऑफलाइन पढ़ाई ना हो पाने की समस्या को भी माना जा सकता है। शोधार्थी समस्या की पहचान कर उसकी एक रूपरेखा तैयार कर लिया जाता है जिसे थीसिस कहा जाता है थीसिस तैयार करने से नई अवधारणा और नया ज्ञान प्रदान करती है। डाटा के आधार पर परिकल्पना डाटा को आधार बनाकर तैयार किया जाता है इसमें एक गुणात्मक और मात्रात्मक थीसिस तैयार होती है और इस तरह समस्या का समाधान किया जाता है। शोधार्थी को अपने सीमित क्षेत्र और सीमित समय को ध्यान मे रखकर ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए। अनुसंधानकर्ता को शोध लेखन को आकर्षक बनाने के लिए मुख्य पृष्ठ से लेकर प्रमाण पत्र को संलग्न करना आवश्यक होता है। इस प्रकार सभी अनुसंधान समस्या का समाधान किया जाता है और जिन पुस्तकों, लाइब्रेरी, शोध निर्देशकों को से ली गई सामग्री के लिए अनुसंधानकर्ता को उन सभी का आभार ज्ञापन आवश्य करना चाहिए। इस प्रकार यह शोध समस्या के प्रक्रिया को पूर्ण रूप से समाधान किया जा सकता है।

धन्यवाद।

संदर्भ सूची

1.प्रो. एस. पी. गुप्ता, 2011 प्रथम संस्करण, 2015 संशोधित संस्करण, 2017 पुनः मुद्रित, अनुसंधान संदर्शिका– संप्रत्यय कार्य विधि एवं प्रविधि, इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन

2.डॉ. श्रीमती शशि कला सरीन / डॉक्टर अंजनी सरीन 2009, शैक्षिक अनुसंधान विधियां, आगरा–2 श्री विनोद पुस्तक मंदिर कार्यालय डॉ राघव मार्ग

3. विपिन अस्थाना/ विजया श्रीवास्तव / कि. निधि अस्थाना, 2012/2013, आगरा–2 अग्रवाल पब्लिकेशंस

4. एच. के. कपिल, 2010 चौदहवाँ संस्करण अनुसंधान विधियां व्यवहार पर विज्ञानों में, आगरा 282002 राखी प्रकाशन

5. एच. के. कपिल, 2012–2015 पंद्रहवां संस्करण अनुसंधान विधियां व्यवहार परक विज्ञान में, आगरा 282002 राखी प्रकाशन

व्यक्ति परिचय

नाम – अर्चना राणा

माता– श्रीमती कौशल्या राणा

पिता – श्री लालू राणा

जन्म तिथि – 08 फरवरी, 1981

लिंग – स्त्री

जन्म स्थान – जामताड़ा, झारखंड

पदनाम– असिस्टेंट प्रोफेसर ऑफ

राधा गोविंद यूनिवर्सिटी, रामगढ़

(डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन)

शैक्षणिक योग्यता– पीएचडी स्कॉलर ऑफ हिस्ट्री 2019–2023

स्नातकोत्तर – इतिहास (इग्नू 2017–19)

स्नातक – इतिहास (इग्नू 2013)

स्नातकोत्तर– चित्र भास्कर (प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ वर्ष 2016)

उपलब्धियां–

*फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम ष्आई सी टी इनबिल्ट टीचिंग एंड लर्निंग फॉर स्कूल टीचरष् फ्रॉम 24 – 30 नवंबर 2021 ग्रेड 'A'

* वेस्को इंडिया द्वारा राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान 8 मार्च 2020

*राजा रवि वर्मा राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान 2018

* विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ द्वारा चित्रकला शिरोमणि सारस्वत सम्मान 13 दिसंबर 2018

* वेस्को इंडिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तरीय चित्रांकन प्रतियोगिता में वर्ष 2017 में प्रथम पुरस्कार

* विश्व कला दिवस पर ओम सत्यम इंस्टीट्यूट ऑफ फिल्म ड्रामा फाइन आर्ट द्वारा सम्मानित

* कला क्षेत्र में वर्ष 2015 और वर्ष 2016 में नवनीत मास्टर स्ट्रोक द्वारा सम्मानित प्रथम पुरस्कार वर्ष 1999 राष्ट्रीय युवा दिवस विवेकानंद जन्मशती रामकृष्ण मठ जामताड़ा दुमका बिहार वर्ष 2095 मैं विद्यासागर सामाजिक सुरक्षा सेवा एवं शोध संस्थान झारखंड द्वारा आयोजित चित्रांकन प्रदर्शनी में द्वितीय स्थान।

मोबाइल न. 7482026501

दिनांक